एक तीसरा रास्ता

ये सिर्फ दस दिनो पहले की बात हैः
हिन्डेनबुर्गडाम के स्पारकासे के सामने अकस्मात मेरी अफ़जल से मुलाक़ात हुई।अपनी जेब से फटाफट बिना फीतों की तीन टूटी फूटी घड़ियॉ निकाल कर उन्हे एन्टिक बताते हुए उनके एवज मे तीन दिनो के लिए वो पच्चास यूरो के लिए गिड़गिड़ाना शुरू कर दिया।
एक सरसरी नजर मैने उस पर डाली।अपने पचपन वर्ष की उम्र मे वो बिल्कुल ही बूढा हो चला था।अधपकी दाढी.पीले दॉत.मुचड़े गन्दे कपड़े चारखाने की एक गन्दी कोट.घिसे पीटे जूते।
एक न एक दिन उसका यही हश्र होना था।अपना सर्वनाश उसने स्वयम निर्धारित कर दिया था।
वो कर्ज नही मुझसे भीख मॉग रहा था और पता नही मुझसे पहले कितने लोगों के सामने गिड़गिड़ा चुका था और कितने दिनो से गिड़गिड़ाये जा रहा थाःएमिने न रही ठाकर।घर पर तीन बच्चे भूखे बैठे मेरा इन्तजार कर रहे है।दुकानो के बन्द होने का समय हो रहा है।
मै चुपचाप उसके हॉथों पर सौ यूरो रख कर आगे बढ गया।
अफ़जल मेरा दोस्त तो नही था.पर वो मेरे लिए बेमानी भी नही थाः
झूठ और जालसाजी जैसे उसके रग रग मे बसी थी.जिनके सहारे वो हम सभी को जीवन की दौड़ मे बहुत ही पीछे छोड़ गया था।तूसमा मे घन्टों कतार मे लग कर इन्तजार करने के बावजूद भी जब हमे कोई काम न मिलता था.तो निराश हम टेक्निकल यूनिवर्सिटी के मेन बिल्डिंग मे कैन्टिन से एक कप चाय या कॉफी लेकर वहॉ की किसी सीढी पर हताश बैठ जाते थे।जब तब वो भी हमसे वहॉ मिलने आता था।थ्री पीस सूट और सफेद जूतों से उसका पुराना लगाव था।उसके कमीज की ऊपर की दो बटने हमेशा ही खुली रहती थी।उसे हमे अपने गले की मोटी सोने की जंजीर जो दिखानी होती थी।दॉई कलाई पर सिक्को की एक गोल्ड प्लेटेड घड़ी.बॉई कलाई पर सोने की एक छोटी सी तख्ती पर उसका खुदा नाम अफ़जल बट्ट.कॉख मे टागेस स्पीगेल.अपनी एक उॅगली मे गाड़ी की चाबी नचाते जब वो हमसे मिलने आता था.तब हम सबकी बकार ही बन्द हो जाती थी।
सिगमून्ड होफ मे वो रहा भी कितना!शायद छ महीने।फिर उसने अपना बोरिया बिस्तर बॉधा और सिगमून्ड होफ को अल्विदा कहा।अपनी टूटी फूटी जर्मन मे पता नही कैसे उसने एक पैंतालीस वर्षीया तलाकसुदा वकील फॉस लिया था।अपने पति से उसे एक बारह वर्षीय बेटी थी।उसके पास बर्लिन के सबसे सभ्रान्त इलाके त्सेलेनडोर्फ मे अपना निजी बंगला और अपनी निजी ठीक ठाक चलती प्रेक्टिस भी थी।
हमसे अपने कमरों तक का किराया तक न भरा जाता था और अफ़जल दौलतों से खेल रहा था।
उसका अपना जीवन सिद्धान्त थाःमै बर्लिन मे न पढने आया हूँ और न ही इन बेशर्म छिनालो के बीच प्यार ढूँढने।मै यहॉ सिर्फ दौलत बटोरने आया हूँ जिस पर ये कभीं नही लिखा होता है कि तुमने उसे कैसे कमाया है।
यहीं से शुरू होती है अफ़जल बट्ट की कहानी.जिसके मध्य के कुछ अंशों का भी मुझे जब तब पता चलता रहता था.पर करीब करीब उसका अन्त मै हिन्डेनबुर्ग डाम पर अपनी ऑखों से देख आया था।
लूटी दौलत मे शायद बरकत नही होती है.पर उसके तमाम झूठों के बीच ये एक सच था कि एमिने उसकी बीबी थी और इस एमिने से अफ़जल को तीन बेटियॉ भी थीं।एमिने एक तुर्क लड़की थी और बर्लिन मे पैदा हुई थी।उसका बाप एक मामूली सा मज़दूर था और मॉ एक अस्पताल मे झाड़ू बुहारू का काम करती थी।ये बर्लिन मे क्रवाएत्सबेर्ग मे एक किराये के मकान मे रहते थे.जहॉ ज्यादेतर तुर्क ही रहते हैं।
इनके बीच डब्ड हिन्दी फिल्मे दबा के देखी जाती हैं।उन दिनो ज्यादेतर मिथून चक्रवर्ती की फिल्में रिलीज होती थी।मन ही मन एमिने इस बंगाली बाबू को अपना दिल दे चुकी थी।
अफ़जल के कई तुर्क दोस्त थे.जिनके जरिये उसका कई परिवारों मे आना जाना था।ईद बकरीद.खतना.शादी व्याहों मे भी उसे बुलाया जाता था।ऐसे ही किसी मौके पर एमिने उससे टकरा गई।
ःअरे मिथून! वो तो मेरा जिग्री यार है।रोज ही उसका फोन आता है।काम मे बेचारा इतना मशरूफ रहता है कि बर्लिन नही आ पाता.लेकिन जब मै बॉम्बे उससे मिलने जाता हूँ तो अपने तमाम शूटिंग्स कैन्सल करवा कर मेरे आगे पीछे भागता रहता है।
कई बार वो एमिने से मिथून की बातें भी करवाया और वो भी उर्दू और अंग्रेजी मे।एमिने को न उर्दू आती थी और न अंग्रेजी.फिर भी फोन पर मिथून के मुँह से अपना नाम सुन कर वो भाव विभोर हो जाती थी।वो अट्ठारह वर्ष की भी न थी।
पता नही अफ़जल ने पाकिस्तान मे अपने किस दोस्त को मिथून का रोल दे रखा था!
मिथून से मिलना या उसे अपना प्यार देना एक मज़दूर की बेटी को असम्भव सा ही लग रहा था.पर उसके दोस्त अफ़जल मे भी ऐसी कौन सी खामी थी!रूडो मे अपना अपार्टमेन्ट है.अपनी गाड़ी है।जब देखो नए नए सूट बूट मे ही नजर आता है।बस रंग रूप और कद ही तो उसके पास मिथून जैसा नही है।
उसने अपनी सतरह वर्षीय जवानी अफ़जल को सौपने की ठान ली।
अब तक अफ़जल अपनी उम्र से काफी बड़ी तलाकसुदा पर अमीर जर्मन औरतों की ढलती जवानी से ही तो खेला था।उन दिनो वो एक सत्तर वर्षीय जर्मन बुढिया से शादी करके तीन वर्षो के खत्म होने का इन्तजार कर रहा था।इसके बाद उसके पासपोर्ट पर जर्मनी का अनलिमिटेड वीजे का ठप्पा लग जाने वाला था।
बूढिये का अपार्टमेन्ट तो वो हड़पे ही था.उसके वर्षो की जमा की गई पूंजी भी हथियाये हुए था।बेचारी एक राशन वाले कमरे मे अपने बुढापे के दिन काटे जा रही थी।इतना ही नही एक तरह से वो अफ़जल की नौकरानी भी थी।घर की सफाई.अफ़जल के कपड़ों पर आयरन करना.छोटी मोटी खरीददारियॉ वही किया करती थी।अफ़जल उसके पेन्शन के पैसे भी हड़प लेता था।बस रोजाना के उसे पॉच मार्क अफ़जल से मिलते थे।
एमिने को भी उसने अपने पत्नी का नौकरानी के रूप मे परिचय दिया।उसका अफ़जल के यहॉ आना जाना शुरू हो गया।बूढिया अपने आपको अपने राशन वाले कमरे मे बन्द कर लेती थी और अफ़जल एमिने को अपने पलन्ग पर खीच कर उसे दीन दुनिया की गढन्त कहानियॉ सुनाने लग पड़ता था।
एमिने को अपने सतरहवें वर्ष मे ही गर्भ ठहर गया.जिसे वो किसी भी कीमत पर गिराने को तैयार न थी।अफ़जल पर एमिने के मॉ बाप और

सम्बन्धियों का निकाह के लिए दबाव पड़ने लगा। अफ़जल को भी पता था कि इस निकाह को नही टाला जा सकता। वरना तुर्क उसे जर्मनी मे नही रहने देंगे।
आनन फानन उसने अपने पासपोर्ट पर जर्मनी का अनलिमिटेड वीजा लगवाया और बूढिये से तलाक़ की अर्जी डलवाई।
उसका तलाक़ तो हो गया, पर उसे रूडो का मकान छोड़ना पड़ा।
लूटी दौलत उसके पास थी ही। उसने एक नया अपार्टमेन्ट क्रूवाएल्सबेर्ग मे ही ले लिया जिसे एमिने ने अपनी पसन्द से सजवाया। उसके जेवरों मे भी अफ़जल का बड़ा पैसा जाया हुआ। शादी इस्लाम पद्धति से हुई। अफ़जल अपने सूट के कोट पर सैकड़ो मार्क टंकवा कर, सफेद सिल्क के फ्राक मे जेवरों से लदी गर्भवती एमिने से शादी करके उसे अपने नए मकान मे ले आया।
ये शादी अफ़जल को बड़ी मंहगी पड़ी। सारे खर्च उसे ही उठाने पड़े।
अब तक जिस विधि से वो पैसे कमाये जा रहा था, सम्भव न था। उसके गले मे रस्सी का नही बल्कि एक नाग का फंदा पड़ चुका था। अब वो उल्टे सीधे कदम ले ही नही सकता था। एमिने के मॉ बाप और उसके सम्बन्धी तेज चाकू से उसका कीमा ही बना कर रख देते। फिर एमिने भी चौबीस घन्टे उसके पीछे साये की तरह चिपकी रहती थी। उसकी उम्र भी बेहद कम थी। पहला गर्भ था, अक्सर वो भावुक हो कर रोने पड़ लगती थी। मन या बेमन अफ़जल को उसके ऑसू पोछने पड़ते थे, उसे तसल्ली देनी पड़ती थी।
समय के साथ एमिने ने एक बेटी जना। दबा कर जश्न मना, बकरे कटे, बाऊख टान्स हुआ। सारे खर्चे राना को ही उठाने पड़े। अभीं दो वर्ष भी न गुजरा था। लूटी दौलत खत्म होने को आई। एमिने दुबारा गर्भवती हुई। राना को अपनी गाड़ी बेचनी पड़ी।
कमाई का कोई जरिया ही उसे न सूझ रहा था। मेहनत मजदूरी से उसकी टांगे कॉपती थी।
अचानक बर्लिन के पार्टनर्स फॉर प्रोग्रेस मे उसकी मुलाक़ात करांची के एक बिजनेसमैन से हुई। वो लैदर के सौ पचास कोट पतलून सैम्पल्स के तौर पर लाए थे। उन्हे कोई आर्डर ही नही मिल पा रहा था। जर्मन तो दूर, उन्हे अंग्रेजी तक न आती थी। ये उन दिनो की बात थी, जब जर्मनो का पूरा विश्वास ही हमसे उठ चुका था। उनका कहना था कि हमसे बिजनेस नही किया जा सकता। न तो हममे फेयरनेस है और न ही पन्क्च्यूयलिटि। जर्मनो के सारे आडर्स चीन, कोरीया, तायवान आदि देशों के लोग ले जाते थे।
अफ़जल करांची वाले बिजनेसमैन को तीन दिन अपने घर पर रखा और पता नही उन्हे कौन कौन सी पट्टियॉ पढाता रहा। वो अपना सारा माल छोड़ कर करांची वापस चले गए। अफ़जल ने अपने ड्राईन्गरूम मे ही अपना दफ्तर खोला और अपनी पहली बेटी के नाम पर अपने दफ्तर का नाम नाहिला इम्पोर्ट एक्सपोर्ट बे गे एर रखा। अब बर्लिन मे घूम घूम कर उसे बस आडर्स इकट्ठे करने थे और आडर्स के बीस परसेन्ट कमीशन के खाने थे। ये काम उतना सरल न था जितना उसने समझ रखा था। वो जहॉ भी गया, दुत्कारा गया। कई तो उसे कोट पतलून की सिलाई दिखा कर कपड़े उसके मुँह पर ही दे मारे। पैसे की इतनी तंगी थी कि दाने दाने के लाले पड़े हुए थे। अब अफ़जल ने सारे सैम्पल्स आधे पौने दाम पर अपने तुर्क दोस्तों के बीच बेचना शुरू कर दिया। सारे कपड़े हॉथो हॉथ बिक गए।
नाहिला इम्पोर्ट एक्सपोर्ट ने छ महीने तक अफ़जल के परिवार का पेट तो पाला ही, ऊपर से बर्लिन के क्रूवाएल्सबेर्ग के सभी तुर्को को लैदर का जैकेटस भी पहनाया। तबीयत से दिवालिया हुए करांची वाले बिजनेसमैन। अब आएँ वो बर्लिन और करें केस अफ़जल के खिलाफ़। उर्दू मे वो अफ़जल को धमकी दे दे कर हार गए। अब वो उसे क़ुरान की आयतें सुनाने लगे। अफ़जल उनके भेजे खत़ खोलता तक न था और ऊपर से उन्हे साला भिखमंगा भी कहता था।
बर्लिन मे उन दिनो और शायद आज के दिनो मे भी कई आम पेशे मे लगे इन्डियन या पाकिस्तानी न तो अपनी कमाई से खुश हैं और न जर्मनो की तिमारदारी से। इनसे छूटकारा उन्हे सिर्फ बिजनेस ही दिलवा सकता था। पैसे तो इनके पास नही होते हैं, पर पर्मानेन्ट नौकरी की वजह से बैंको से इन्हे आसानी से क्रेडिटस मिल जाते हैं।
ऐसे कई सनकी बाद के दिनो मे अफ़जल से टकराये। अफ़जल ने उनकी पुंजी से कपड़ों की दुकान, विडियो कैसेटस मैन्यूफेक्चर, ट्रेवेल एजेन्सी, बेकेराई, हैन्डी की दुकान, राशन की दुकान और न जाने कौन कौन से बिजनेस खोले और बन्द किए, पर सच्चाई ये थी कि वो उनके पैसों से अपने परिवार का पेट पालता रहा और अपनी झूठी शानें बघारता रहा। उसकी वजह से न जाने कितने लोग बर्लिन मे कर्जदार बने और कितने कर्जदार बनने को आतूर थे!
अफ़जल का परिवार अब बढ कर पॉच जनो का हो चला था। अब वो तीन बेटियों का बाप था। एमिने से शादी किए उसे नौ वर्ष हो चले थे, पर परिवार मे कलह ही कलह था। बेटियों के पास फर्मायशें ही फर्मायशें होती थी। अफ़जल झल्ला कर उन्हे ही नही बल्कि अपनी बीवी को भी उर्दू मे सैकड़ों भद्दी गालियॉ सुना डालता था।
इन नौ वर्षो मे एमिने ने उर्दू तो न सिखी, पर उर्दू मे दी गई गालियॉ वो जानने लगी थी। वो हमारे खाने भी पकाना जान गई थी, जो वो ही नही बल्कि उसकी तीनो बेटियॉ भी बड़े मन से खाती थीं।
अफ़जल की उल्टी सीधी कमाई से एमिने किसी तरह अपना परिवार चला रही थी। जरूरत पड़ने पर वो बिना अफ़जल को या अपने मॉ बाप को बताए अपने गहने भी तुर्की बाजार मे बेच आती थी। अपने परिवार मे वो ये बात कभीं भी जाहिर न होने दी कि उसे कोई कष्ट्र है। जब तब अफ़जल उसे जूतियाया भी करता था। उसे न तो उसके खानदानीपन की कद्र की और न ही उसके परियों जैसे सौन्दर्य और स्निग्धता की। पता नही अपने पिछले जीवन मे अफ़जल ने ऐसा कौन सा नेकी का काम किया था और एमिने से ऐसी कौन सी गलती हो गई थी कि ईश्वर ने उन्हे इस जीवन मे मिलाया था।
अब मै आता हूँ इस लम्बे दौर मे अफ़जल से अपनी चन्द मुलाक़ातों परः
तीन सितम्बर सन सन्तानबेः
अचानक आज मेरी मुलाक़ात अफ़जल से हुई। मेट्रो स्टेशन बर्लिनरस्ट्रासे पर अफ़जल के ही कद का एक आदमी एक छोटी सी बच्ची का हॉथ थामे कन्वेयर पर खड़ा था। उसने काले रंग का एक ढीला ढाला पतलून और काले चमड़े का एक जैकेट पहन रखा था। बच्ची एक बड़े वड़े छापों वाली बेलबॉट और जैकेट पहने हुए थी। उसके सुनहरे बाल कन्वेयर की सीढियों को छू रहे थे। मेरा मन कह रहा था कि ये अफ़जल ही है। मैने उससे न मिलने की मन ही मन कसम ले रखी थी फिर भी मन न माना और मैने तेज कदमो से सीढियॉ चढनी शुरू कर दी। बॉई तरफ से रगड़ता मै बस एक ही सीढी ऊपर चढा था कि

ःअरे ठाकर अफजल को बिल्कुल ही भूल गए. कहते हुए वो मेरे गले लग गया।
अफजल की एक बात मुझे आज तक अच्छी लगती है और शायद हमेशा अच्छी लगेगीःउसका गर्मजोशी के साथ मुझसे मिलना।एक पल के लिए उसके ऑखो की सारी कपट मिट जाती है. जिससे वो लोगों को लूटता है।
अफजल की दूसरी बेटी भी बिल्कुल अपनी मॉ पर गई है।इस काले कलूटे अफजल की किस्मत मे सिर्फ परियॉ ही लिखी हैं।अपने बाप से वो किसी खास जूती की जिद्द किए बैठी है और उसे इस दुकान से उस दुकान के चक्कर लगवाए जा रही है।
ःबड़े ऊँचे शौक पाल रखी है ये मॉ की लौंड़ी।कोई जूती इसे पसन्द ही नही आती।
ःएक कोई मोटे बकरे की तलाश मे हूँ ठाकर।
न अफजल बदला था और न ही उसका शब्दकोष।न तो उसकी नीयत मे कोई सुधार आया था और न उसकी जर्मन मे।
पता नही उसका खुदा उस पर कब तक अपना रहम बनाए रखेगा!
तेरह जनवरी सन अन्ठानवेः
आज पता नही कितने महीनों के बाद मै सिगफ्रिडस्ट्रासे क्लाऊस से मिलने गया था।मै ये भूल ही चला था कि अफजल भी इसी इलाके मे रहता है।क्लाऊस के साथ मै एक तुर्की इम्बिस मे डोनर कबाब ले कर खाने ही बैठा था कि अचानक कीचन की तरफ से एक पर्दा उठाकर अफजल आता दिखा।उसने काले रंग का एक ओवरकोट पहन रखा था. जिसका कॉलर उठा हुआ था और उसका लगभग आधा चेहरा छुपा हुआ था।उसके पीछे दो मुस्तन्ड तुर्की खड़े थे।मै उसे देख कर भी अनदेखा करना चाहा पर निष्फल।दोनो हॉथ उठाए वो मेरी तरफ बढा और मुझे अपनी कुर्सी छोड़नी पड़ी।
ःचल ठाकर घर चलते हैं।तूने कब से ये कचड़े खाने शुरू कर दिए!
ःफिर कभीं।मै अपने दोस्त को अकेला तो नही छोड़ सकता।
ःतो अपने दोस्त को भी साथ ले ले और फेंक ये कचड़े म्यूल मे।चल घर पर तूझे एमिने के हॉथों के बने पराठे खिलवाता हूँ और साथ मे बकरे की कराही वाली मिट और सिरके वाली सलाद।
ःफिर कभीं।आज रहने दो।
ःठाकर! तेरी फिर कभीं सुन सुन के मेरे कान पकने को आए।उठता है या बुलाऊँ चार तुर्को को!
ःचार तुर्को को ही क्यों!तुर्कियों की फौज क्यों नही!
अफजल को मेरी ना समझ मे आ गईःखैर जैसी तेरी मर्जी. पर कभीं अईयो जरूर।
इक्कीस सितम्बर अन्ठानवेः
राना का आज का निमंत्रण मुझसे न टाला गया।बालकोनी मे लाम कॉटलेटस ग्रिल करने का प्रोग्राम था।शनिवार का दिन था।दो और भारतीय परिवार वहॉ आये हुए थे।एक किसी फैक्ट्री मे मजदूरी करता था और दूसरा पेशे से रसोईया था।दोनो की बीवियॉ दिल्ली की थी।नाभी के नीचे अपनी तंग साड़ियॉ बॉधे. पॉव पर पॉव चढाए. आधी अंग्रेजी और आधी हिन्दी मे यहॉ वहॉ की बातों मे लगी हुई थीं।सुबह के दस भी नही बज रहे थे. पर कोला के साथ व्हिस्की का दौर चल रहा था।एमिने ने भी साड़ी पहन रखी थी।वो अपना पल्ला कमर मे खोंसे बालकोनी मे रसोईये भाई की मदद मे लगी थी।उसकी तीनो बेटियॉ उसके मॉ बाप लिवा ले गए थे।
मै रात के नौ बजे तक वहॉ रहा।
कई दिनो तक मुझे इस शनिवार की कई बातें कचोटती रहींःअपना भारतीय मजदूर अफजल के साथ विडियो कैसेटों के मैन्यूफेक्चर करने का फैसला कर चुका था।मन ही मन वो करोड़पति बन चुका था।ये दावत इसी खुशी मे दी गई थी।
खाने के बाद पूरे वाल्यूम पर अफजल ने आधुनिक बम्बईया फिल्मो के गाने लगाए।यूरोपीय सभ्यता मे पैदा हुई और पली एमिने हमारे जूठे बर्त्तनो को हटाने और साफ सफाई मे लगी रही और अपनी डेलियाड बीवियॉ अपने पतियों के साथ ड्राईन्गरूम मे थिरक थिरक कर अपना सौन्दर्य प्रदर्शन करती रहीं।जब तब उठ कर अफजल भी अपनी कमर हिला आता था और इसी बहाने उन्हे इधर उधर छू छा आता था।
मुझे उसकी कही एक बात रह रह कर याद आती हैःतुम लोगों के बीच यहॉ बर्लिन मे सिर्फ ठल्लू ही ठल्लू ही बैठे हैं।व्हिस्की चढाके पसर जाते हैं।अपनी बीवियों को भी शराब पीने से मना नही करते।फिर इनके साथ तुम्हे जो कुछ भी करना है करो।
अफसोस मुझे बस एक बात पर हो रहा थाःपूरे दावत के दौरान अफजल सिर्फ एमिने पर बिना किसी वजह के बरसता रहा और उसे रंडी और कुत्ती बनाता रहा।
चलने से पहले मुझे इतना तो उसे कहना ही पड़ाःदेर अभीं भी नही हुई है अफजल।अपने आपको बदलो. वरना एक दिन तुमसे तुम्हारा जहान तो छूटेगा ही. अपना परिवार भी तुम्हे छोड़ जाएगा।इस दावत के लिए धन्यवाद. पर मेरे कहे पर एक बार विचार जरूर कर लेना. वरना एक दिन तुम बहुत पछताओगे
डायरी के पन्ने उलटता पलटता मै सन निन्यानबे के मई महीने मे आया
नौ मई निन्यानबेः
अचानक हेरमानस्ट्रासे पर मेरी मुलाकात एमिने से हुई।वो अपनी तीनो बेटियों के साथ खरीददारी करके वापस लौट रही थी।उसके दोनो हॉथों मे छ या सात लाल प्लास्टिक के थैले थे।मुझे उसने और उसकी बेटियों ने एक तरह से घेर ही लिया।मुझे इनके संग अफजल से मिलने जाना ही पड़ा।उसके दोनो टखनो मे गठिए का दर्द ऐसा उभरा था कि उससे चला तक न जाता था।गठिए से ज्यादे उसे एक और दर्द था।मकान का पिछले महीने का किराया न गया था।मकान मालिक के दो नोटिश उसे मिल चुके थे।विडियो कैसेट का धन्धा न चल पाया।उजूल फिजूल बातों मे उसके पार्टनर ने बड़ा पैसा बहाया।
रसोई मे खड़ी एमिने अपनी सधी हॉथों से रोटियॉ सेंकने मे लगी हुई थी।साथ मे रह रह कर वो एक देगची का ढक्कन हटा कर एक चम्मच से कुछ हिला डुला देती थी
राना की तीनो बेटियॉ अपनी मॉ के रूप और स्वभाव पर गई थी।बड़ी बेटी ग्यारह वर्ष की दूसरी नौ की और तीसरी पॉच वर्ष की हो चली थीं।तीनो खाने की मेज सजाने मे लगी थीं।जब खाना तैयार हो गया तब एमिने अपनी बड़ी बेटी के साथ अफजल को बिस्तर से उठा कर सहारा

देने आई।दोनो को इशारे से मना करके मै स्वयम अफजल को उठाने बढा।
इस अफजल पर चार निर्दोष जिन्दगियों का दारोमदार था.जो अब टूट चला था या फिर टूटने को था।
करोड़पति बनने का झॉसा दे दे कर वो न जाने कितनो को लूट चुका था।अब बर्लिन मे शायद ऐसा कोई भी न बचा था.जो उसके सब्जबागों के झॉसों मे आता।वो छोटे मोटे कर्जो से अपना परिवार चला रहा था।एमिने सुवह पॉच बजे उठ कर एक स्कूल मे झाड़ू पोछा करने जाती थी.ताकि उसकी बेटियॉ भूखों न मरे।
सन दो हजार की डायरी के बस कुछ ही पन्नो पर अफजल का जिक्र आया।बर्लिन मे वो मुझे यदा कदा दिखा तो जरूर.पर दूर से ही।कभीं कहीं सीढियॉ चढते तो कभीं उतरते।गठिए की बीमारी उसके पीछे साये की तरह डटी थी।
सन दो हजार एकः
एक दिन काम पर मै पोस्टऑफिस से वापस अपने वार्ड मे वापस लौट रहा थाः
ये ग्यारह अगस्त की बात है।अस्पताल के मीलों लम्बे पहली मंजिल की फ्लोर पर दूर से मुझे एक औरत आती दिखी।उसने एक सफेद रंग का छींट का लम्वा सा फ्रॉक पहन रखा था.जो उसके पैरों तक आ रहा था।बॉये हॉथ से वो एक पहियों वाला इन्फ्यूसोमाट थामे धीरे धीरे मेरी ओर बढी आ रही थी।उसके बालों के सारे लट उसके चेहरे पर झूल रहे थे।
एक पल को मुझे ऐसा लगा जैसे वो एमिने हो।पर मै आश्वस्त न था।मै मुँह मोड़ कर दीवार पर लगी एक तश्वीर देखने का उपक्रम करता रहा।
जब ये औरत मेरे बगल से गुजरने को आई तो मै हल्के से मुड़ाः
एमिने को एक केमिकल थिरैपी दी जा रही थी।उसकी बड़ी ऑत मे कैन्सर हो गया था जिसे ऑपरेट कर के हटा दिया गया था.फिर भी उसे एक थिरैपी दी जा रही थी.जो छ महीने तक चलनी थी।उसके सुनहरे बाल तो सही सलामत थे.पर उसका वजन बेहद घट गया था।उसकी कमर थामे मै उसे उसके वार्ड मे ले गया।उसे उसके विस्तर पर लिटा कर उसके बदन पर चादर खींच दी और एक कुर्सी लेकर बैठ गया।उससे एक शब्द न बोला गया।उसकी पथराई ऑखें छत पर जा टिकी थी।उसकी ऑखों मे सावन भादो की ऐसी वर्षात आई थी.जिसका मुझे कोई अन्त ही न दिखता था।
न सिर्फ अफजल.बल्कि बर्लिन मे रहने वाले तमाम मुसलमान.जिनसे मै मिल चुका था.अपनी पत्नियों के मामले मे बेहद शक्की थे।सिर्फ इस वजह से मै एमिने से दुबारा मिलने कभीं उसके वार्ड मे नही गया।मै इस वार्ड की एक नर्स को जानता था।उसे मै रोज ही फोन करके एमिने का हाल चाल पूछ लेता था।खाने पीने का जो भी सामान मुझे भिजवाना होता था.मै इसी नर्स के जरिये एमिने को भिजवा देता था।ये नर्स एमिने से हर मिलने जुलने वालों के बारे मे भी मुझे बताती रहती थी।एमिने से अफजल तो कभीं कभार ही मिलने आता था.पर उसकी बेटियॉ अपने नाना नानी के संग उससे मिलने हर दिन शाम को आती थीं।
अफजल की सरपरस्ती मे एमिने अपने जीवन का उन्तीसवॉ साल भी न देख पाई।
मुझसे मिले सौ यूरो का अफजल ने क्या किया!ये तो वही जाने.पर वो दूसरे दिन फिर मुझे हिन्डेनबुर्गडाम पर स्पारकासे के सामने अपनी हॅथेली पर बिना फीतों की टूटी घड़ियॉ दिखा दिखा कर लोगों से भीख मॉगते दिखा।
ऑम्पल हरा हो चला था.पर मैने अपनी सायकल आगे न बढाई।एक दूसरा रास्ता ले कर मै वापस घर चला आया।
एक तीसरा रास्ता मुझे दूर दराज तक नज़र न आयाः

प्रमोद कुमार सिंह